अक्रम यूथ

जुलाई 2020 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ 20

The power of 9

series 8

किसी भी जीव का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष, जीवित अथवा मृत,
किसी का किंचित्मात्र भी अवर्णवाद, अपराध, अविनय न किया जाए...

अनुक्रमणिका

04 अवर्णवाद, अपराध, अविनय यानी क्या?

06 ज्ञानी विद् यूथ

08 पराया बखेड़ा

10 क्या आपको पता है?

12 अक्रम पीडिया

14 अनुभव

16 Quotes

18 Q & A

20 चलो, मदद करें

23 #कविता

जुलाई 2020
वर्ष : 8, अंक : 03
अखंड क्रमांक : 87

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता
Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn
in favour of "Mahavideh Foundation"
payable at Ahmedabad.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

टी.वी. देखते समय, खेलते समय, दोस्तों के साथ हँसी-मज़ाक करते समय या अन्य किसी भी परिस्थिति में व्यक्तियों के बारे में कुछ न कुछ अभिप्राय बँध जाते हैं। ज्यादातर यह अभिप्राय और उससे निकली हुई वाणी, दोनों नकारात्मक ही होते हैं। इनमें से कुछ व्यक्ति तो जिंदा भी नहीं होते और ज्यादातर व्यक्ति जैसे कि देश-विदेश के नेता, अभिनेता/अभिनेत्री, खिलाड़ी, वगैरह जिनसे हम कभी मिले भी नहीं हैं, हमारे पास उनकी कोई व्यक्तिगत जानकारी भी नहीं है, फिर भी लापरवाही से उन पर कई तरह के दोषारोपण कर देते हैं। इसके अलावा करीबी व्यक्ति, रिश्तेदार, दोस्त, शिक्षक वगैरह के लिए भी उनकी गैरहाज़िरी में निंदा-कूथली कर देते हैं। इसे कलयुग का प्रभाव कहें या मनुष्य का प्राकृतिक दुर्गुण लेकिन छोटे से लेकर बड़े, सभी के व्यवहार में यह एक बुरी आदत सामान्य तौर पर देखी गई हैं।

दोस्तों, आश्चर्य की बात तो यह है कि ऐसा अविरत चलता ही रहता है और अनजाने में ही दिन-रात हम अगले जनम के लिए अधोगति के बीज बो देते हैं। अक्रम यूथ के इस अंक में परम पूज्य दादा भगवान द्वारा दी गई नौ कलमों में से आठ्वीं कलम की विस्तृत समझ प्राप्त करें ताकि ऐसी भूल कहाँ-कहाँ करते हैं वह हमें पता चले और इस बुरी आदत से बाहर आ सकें। उसके लिए शक्तियाँ माँगेंगे।

- डिम्पल मेहता

अवर्णवाद
अपराध
अविनय
यानी क्या?

अवर्णवाद

अवर्णवाद यानी 'ज्यों का त्यों' कहने के बजाय उल्टा चित्रित करना। अच्छा हो या खराब हो, सभी को खराब ही कहना। अवर्णवाद निंदा से भी बुरा कहलाता है। गाढ़ निंदा यानी अवर्णवाद!

जैसे कि कोई व्यक्ति की अच्छी कीर्ति और रुतबा हो, उसके बारे में उल्टी बातें फैलाना, उसे अवर्णवाद कहा जाता है।

अपराध

अपराध शब्द, 'राध' धातु से उत्पन्न हुआ है। आराधना करने से ऊर्ध्वगति होती है और विराधना करने से अधोगति होती है। यह जानते हुए भी कि यहाँ विराधना करने जैसा नहीं है, फिर भी इच्छापूर्वक, जान-बूझकर विराधना करें तो वह अपराध कहलाता है। अपराध यानी 'खुद कर रहा है, वह गलत है' ऐसा जानते हुए भी करना, अपराधी खुद तो आगे नहीं बढ़ पाता और किसी को भी आगे नहीं बढ़ते देता।

बहुत तीव्र अहंकारी या तंत वाला व्यक्ति अपराध कर बैठता है।

अविनय

खुद को औरों से बड़ा मानना, वह अविनय है। किसी को किंचित्मात्र दुःख न हो, वह विनय और विनय नहीं करना यानी किसी को दुःख देना, वही अविनय।

विधिवत् विरोध कर रहा हो, वह विराधना की गई कहलाता है। जब कि अविनय उससे निचला स्टेप है। अविनय यानी 'मुझे कुछ लेना-देना नहीं' ऐसा दृष्टिकोण।

ज्ञानी विद् यूथ

प्रश्न : हम किसी मृत व्यक्ति का अपराध कैसे कर देते हैं?

पूज्यश्री : भले ही अपने जीवन काल में व्यक्ति से कोई भूल-चूक हो गई हो लेकिन उनके चले जाने के बाद उनके बारे में एक शब्द भी गलत नहीं बोलना चाहिए। 'रावण ऐसे थे, वैसे थे।' ऐसा बोलना बड़ा गुनाह कहलाता है। महान विद्याधर रावण क्षायक समकितधारी थे और उन्होंने भावी तीर्थंकर का उच्च पद प्राप्त किया था। उनके बारे में गलत नहीं बोलना चाहिए। लोग गलत बोलते हैं और गुनाह बाँध कर चार गति में भटकते रहते हैं। हमारा खुद का ठिकाना नहीं है, तो ऐसे में क्या हमें रावण का गलत चित्रण करने का अधिकार है? जब कोई सुनने वाला मिल जाता है तो व्यक्ति बोलने से नहीं रुकता और बिना समझे विराधनाएँ करता रहता है। भले ही व्यक्ति ने शरीर छोड़ दिया लेकिन वे खुद इस ब्रह्मांड में कहीं तो हैं न? उन तक स्पंदन पहुँच जाते हैं और हमें गुनाह लगता है, इसलिए उनके बारे में या अन्य किसी के भी बारे में गलत नहीं बोलना चाहिए। बहुत सावधान रहने जैसा है।

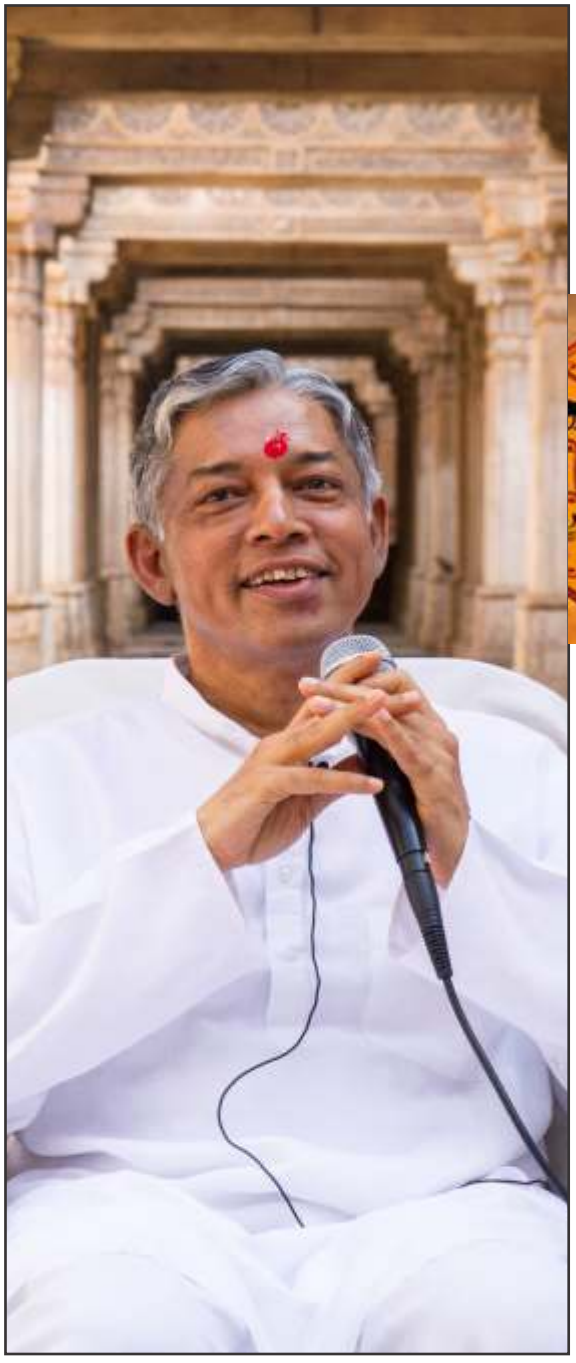

प्रश्न : किसी मृत व्यक्ति के बारे में हम ऐसा कहें कि, 'मुझे कुछ लेना-देना नहीं है।' तो हमने अविनय किया कहलाएगा?

पूज्यश्री : हमें ऐसा बोलने की ज़रूरत क्या है? "हाँ, गए वे अच्छे व्यक्ति थे।" ऐसा कहने से बात खतम हो गई। जो मर गए हैं उनकी कुंडली ज्योतिष को दिखाएँगे तो वे क्या कहेंगे?" फेंक दो, अब उनकी कुंडली देखने का कोई मतलब ही नहीं है। वे चले गए, अब उनकी किताब खोलनी भी नहीं चाहिए और देखनी भी नहीं चाहिए।" ऐसा कहेंगे, ठीक है न? उसी तरह जो व्यक्ति हाज़िर नहीं है उस व्यक्ति की बात करने की ज़रूरत नहीं है। "मुझे लेना-देना नहीं है।" ऐसा कहने से द्वेष होता है। यह एक प्रकार का तिरस्कार ही कहलाता है।

पराया बखेड़ा

पीतलपूर गाँव में रहने वाली झमकू के पड़ोस में एक दंपति (राजू भाई और लक्ष्मी बहन) रहते थे। एक दिन उनके बीच कुछ कहा-सुनी हो गई, जो झमकू ने सुन ली। फिर तो आदत के अनुसार उसने इस छोटी सी बात को बड़े झगड़े का स्वरूप देकर बात का बतंगड़ बना दिया। देखते ही देखते पूरे गाँव में यह अफ़वाह फैल गई कि उनका तलाक होने वाला है। कुछ दिनों बाद गाँव के मुखिया, गाँव के कुछ अग्रणी लोग और बुजुर्गों को लेकर राजू भाई और लक्ष्मी बहन को तलाक न लेने के बारे में समझाने के लिए उनके घर गए। वे लोग तो यह बात सुनकर हैरान हो गए! लेकिन सभी की बात सुनकर कुछ ही देर में वे समझ गए कि यह बात किसने फैलाई होगी। उन्हें बहुत दुःख हुआ लेकिन झमकू के बारे में कुछ भी कहे बगैर सभी को समझाकर वापस भेज दिया।

एक दिन झमकू खाना पका रही थी तभी समाचार मिला कि उसकी चचेरी बहन को पास वाले अस्पताल में भर्ती किया है। यह सुनते ही झमकू, आंगन में खेल रहे अपने सात साल के बेटे बिरजू को कुछ समझाकर, घबराती हुई अस्पताल जाने निकली। मम्मी की दौड़-धूप देखकर बिरजू को मम्मी की मदद करने का मन हुआ इसलिए वह सब्जी काटने लगा। आज पहली बार चाकू हाथ में लिया था और उसे चोट लग गई। दर्द से कराहता हुआ बिरजू खून देखकर डर गया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। यह सुनकर दूसरी पड़ोसन सुधा ने खिड़की से झांक कर देखा। बिरजू को सब्जी काटते हुए देखकर उसने सोचा कि 'इतने छोटे बच्चे से झमकू खाना बनवा रही है!'

इस घटना के दूसरे ही दिन, गली के कुछ बुजुर्गों ने बेटे से काम करवाने की बात को लेकर झमकू को बहुत डाँटा। अपनी जान से भी ज्यादा बेटे को संभालने वाली झमकू ऐसी अफ़वाह सुनकर बहुत दुःखी हो गई। तभी लक्ष्मी बहन ने आकर सबसे कहा, 'आपसे कुछ गलती हो रही है। झमकू एक श्रेष्ठ माता है।' उस समय गाँव की कुछ औरतों को खिड़की से झांकते हुए देखकर झमकू को पुरी बात समझ में आ गई। उसे तुरंत ही समझ में आ गया कि जैसे वह खुद बात का बतंगड़ बनाकर गाँव में अफ़वाह फैलाती थी, वैसा ही उसके साथ भी हुआ है। अभी तक जिन लोगों के बारे में उसने ऐसी झूठी बातें फैलाई हैं, उन सभी की क्या हालत हुई होगी? यह सोचकर अपनी इस आदत से छूटने के उद्देश्य से वह गाँव के एक साधु से मिलने गई।

उसने साधु को अपनी पुरी बात और समस्या बताई। साधु ने शांति से पुरी बात सुनी और कुछ सोचकर उसके हाथ में मोर के पंख से भरी हुई थैली रखते हुए कहा, "यहाँ से घर जाते समय इस थैली में से पंख रास्ते में बिखेरते हुए जाना और कल वापस आते समय गिराए हुए पंख इकट्ठा करके इस पोटली में रखकर ले आना।" झमकू को आश्चर्य हुआ लेकिन साधु की बात पर विश्वास करके रास्ते में पंख बिखेरते हुए वह घर गई। दूसरे दिन जब वह पंख बिनने लगी तो उसे सिर्फ चार-पाँच पंख ही मिले क्योंकि ज्यादातर पंख इधर-उधर उड़ गए थे। झमकू ने लगभग खाली थैली साधु के सामने रखी। यह देखकर साधु ने झमकू को समझाया, "जिस तरह पंख बिखेरना आसान है लेकिन जो पंख उड़ गए हैं उन्हें वापस पाना मुश्किल है उसी तरह किसी के बारे में सच्ची-झूठी बातें फैलाना बहुत

किसी के बारे में सच्ची-झूठी बातें फैलाना बहुत आसान है लेकिन उस अफ़वाह को लोगों के दिमाग से निकालना बहुत कठिन है।

आसान है लेकिन उस अफ़वाह को लोगों के दिमाग से निकालना बहुत कठिन है। किसी की अच्छी बात फैलाने में इतना जोखिम नहीं है लेकिन गलत बात तो फैलानी ही नहीं चाहिए।" झमकू को अपनी गलती समझ में आ गई और अपनी आदत पर पश्चाताप हुआ। बस, तभी से उसने तय किया कि वह लोगों की निंदा नहीं करेगी।

दोस्तों, झमकू की तरह हम भी जाने-अनजाने ऐसा कर बैठते हैं जिसका औरों पर बहुत बुरा असर पड़ता है।

किसी के बारे में यदि बात करनी ही है तो क्यों न अच्छी बात करें? जैसा हमें सुनना पसंद है वैसा ही बोलें।

क्या आपको पता है?

जहाँ तिरस्कार और निंदा होंगे वहाँ लक्ष्मी नहीं ठहरेगी। लक्ष्मी कब नहीं मिलती है? लोगों की कूथली, निंदा में पड़े तब। मन, देह और वाणी स्वच्छ होगी तो लक्ष्मी मिलेगी।

मृत व्यक्ति का आत्मा किसी अन्य देह में है ही, यदि उसे गलत भाव पहुँचते हैं तो हमें दोष लगता है।

किसी के बारे में गलत बोला हो तो वह उस तक पहुँच जाता है और हमारे आत्मा के ऊपर आवरण आते हैं और हम उसके साथ हिसाब में बँध जाते हैं।

किसी के बारे में गलत बोलें, निंदा करें उसे विराधना कहते हैं। विराधना करने से पतन हो जाता है।

तुझे मार खाना हो तो मार के आ। तुझे निंद्य बनना है तो निंदा कर।

विनय में थोड़ी सी भी कमी हो तो मोक्ष उड़ जाता है।

व्यापारियों ने तो बहुत मिलावट की है, तरह-तरह की! और फिर लोग उनकी निंदा करते हैं। इस तरह निंदा करके मनुष्य चार गति में भटकता रहता है। एक घंटे की निंदा से जानवर गति के आठ जन्म बाँधते हैं।

अक्रम पीडिया

नाम - आयुष महेता
उम्र - 20 साल

हलो फ्रेन्ड्स,

रोज की तरह आज भी मैं नौ कलमें पढ़ रहा था।

'हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी देहधारी जीवात्मा का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष, जीवित अथवा मृत, किसी का किंचितमात्र भी अवर्णवाद, अपराध, अविनय न किया जाए, न करवाया जाए या कर्ता के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए।'

यह आठ्वीं कलम पढ़ते ही हमारे पड़ोसी, जीवा चाचा का कल सुबह वाला प्रसंग याद आ गया...

मैं और मेरा दोस्त नवीन, दोनों मॉर्निंग वॉक के लिए गए थे। हम लौट ही रहे थे तभी नवीन के घर से फोन आया कि हमारे पड़ोसी जीवा चाचा का देहांत हो गया है। मैं और नवीन उनके घर की ओर जाने लगे। रास्ते में जीवा चाचा की बातें करते हुए मैंने कहा, "जीवा चाचा बहुत कंजूस थे। मैंने कभी उन्हें अच्छे कपड़ों में नहीं देखा।" नवीन ने इस बात का समर्थन करते हुए कहा, 'सही बात है। भगवान के नाम पर उन्होंने कुछ दान-धर्म भी नहीं किया होगा।' इस तरह जीवा चाचा की बातें करते हुए हम उनके घर पहुँचे। वहाँ जा कर हमने जो द्रश्य देखा उसे देखकर हम सोच में पड़ गए।

हुआ यह था कि हमारी आधी सोसाइटी भर जाए उतने बच्चे वहाँ ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे। हमें लगा कि इतने सारे रिश्तेदार तो नहीं आए होंगे! तो इतने सारे बच्चे कहाँ से?

उत्सुकतावश वहाँ उपस्थित एक व्यक्ति से मैंने पूछा, "ये सारे बच्चे कौन हैं?" यह सुनते ही उस व्यक्ति ने नम्रता से कहा, "ये उस अनाथ आश्रम के बच्चे हैं जिसे जीवा चाचा चलाते थे। उनकी लगभग पूरी आमदनी वे इन बच्चों के पीछे खर्च कर देते थे।"

ये बात सुनकर हमारी आँखे नम हो गई हमें जीवा चाचा के प्रति सम्मान पैदा हुआ और खुद के प्रति घृणा उत्पन्न हुई कि, 'इतने अच्छे व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी हम उनके बारे में अच्छा बोल नहीं पाते हैं।'

यही बात मुझे दादा की वाणी में मिली और ऐसा लगा मानो मेरा दिल पश्चाताप से भर गया हो...

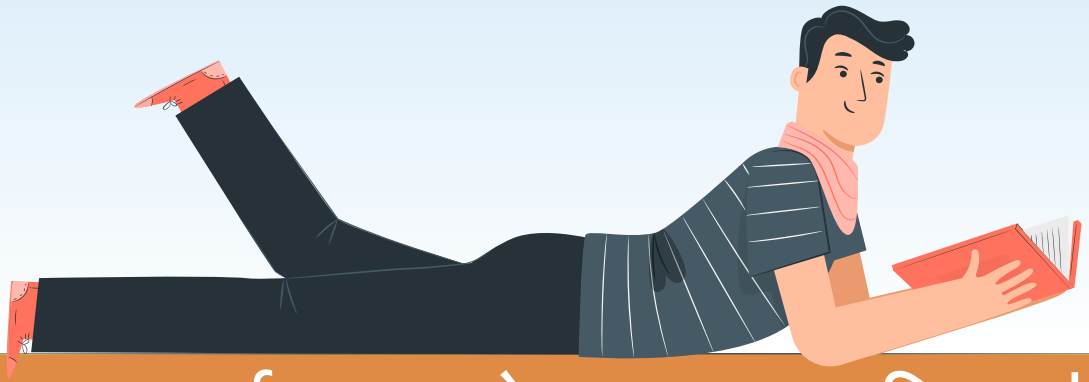

अवर्णवाद - परोक्ष या मृत व्यक्ति का!

प्रश्नकर्ता : कलम आठ्वीं में मृतकों (जिनकी मृत्यु हे गई है) को भी हम जो क्षमापना करते हैं, हम जो संबोधन करते हैं, वह उनको पहुँचता है क्या?

दादाश्री : उन्हें पहुँचाने का नहीं है। जो आदमी मर गया है और आज उसका नाम लेकर आप गालियाँ दो तो आप भयंकर दोष के भागी बनते हो, ऐसा हम कहना चाहते हैं। इसलिए हम मना करते हैं कि मरे हुए का भी नाम मत देना (कुछ उल्टा मत बोलना)। बाकी पहुँचाने-नहीं पहुँचाने का तो सवाल ही नहीं है। कोई बुरा आदमी हो और वह सबकुछ उल्टा करके मर गया हो, फिर भी उसका बाद में कुछ बुरा मत बोलना।

रावण के बारे में भी उल्टा नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि वह अभी देहधारी है (दूसरे जन्म में)। अतः उसे 'फोन' पहुँच जाता है। 'रावण ऐसा था और वैसा था' बोलें न, तो वह उसे पहुँच जाता है।

आपके कोई सगे-संबंधी जिनकी मृत्यु हो गई हो और लोग उनकी निंदा करते हों तो आपको उसमें हाँ में हाँ नहीं मिलानी चाहिए। ऐसा हुआ हो तो आपको फिर पछतावा करना चाहिए कि ऐसा नहीं होना चाहिए। किसी मृतक के बारे में ऐसी बात करना भयंकर अपराध है। जो अब है ही नहीं उसे भी अपने लोग नहीं छोड़ते। ऐसा करते हैं या नहीं करते लोग? ऐसा नहीं करना चाहिए, ऐसा हम कहना चाहते हैं। उसमें बड़ा भारी जोखिम है।

उस समय पहले से बँधे अभिप्राय अनुसार यह बोल देते हैं। इसलिए यह कलम बोलते रहते हो और फिर वे बात बोल दी जाए, तो दोष नहीं लगता।

अनुभव

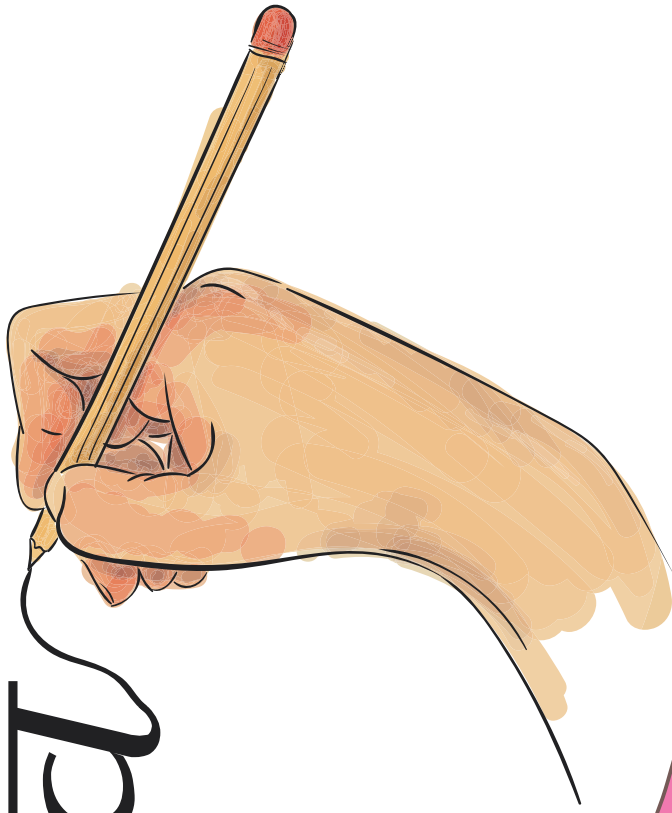

जब भी मैं किसी मृत व्यक्ति के बारे में नेगेटिव बोलती हूँ तब मुझे पूज्यश्री की वह बात याद आती है कि उस व्यक्ति का शुद्धात्मा अब किसी और देह में हाज़िर है ही और उस शुद्धात्मा तक टेलिफोन पहुँच ही जाएगा। इसलिए यदि कभी गलती से भी किसी मृत व्यक्ति के बारे में कुछ बोल देते हैं तो तुरंत ही उनके शुद्धात्मा से माफी माँग लेती हूँ।

- तृष्णा

जब से हमने इस कलम पर काम करना शुरू किया तब से हमारी टीम के सब लोग मिल कर 15 बार आठ्वीं कलम बोलते थे। इसी दौरान मेरी कॉलेज में फैशन-शो की प्रैक्टिस चल रही थी, जिसमें एक लड़की समय पर नहीं आती थी। उसके कारण हमेशा देर हो जाती और गुस्से में आ कर मैं मैम से उसकी शिकायत करती रहती थी। कई बार तो झूठ-मूठ ही शिकायत करती। एक दिन मैम से उसकी झूठी शिकायत करके मैं वापस आ रही थी, तभी अचानक ही मुझे अंदर ऐसा लगा कि, "मैं यह क्या कर रही हूँ?" दादा की कलम क्या ऐसा सिखाती है? नहीं। तुरंत ही उस लड़की के पास जा कर मैंने कहा कि "तेरे समय पर न आने के कारण गुस्से में आ कर मैंने मैम से तेरे बारे में बहुत कुछ कहा है। लेकिन अब मुझे मेरी गलती का एहसास हो गया है, सॉरी।" और साथ ही मैं मन में आठ्वीं कलम बोलने लगी। अच्छा हुआ, ज्यादा बिगड़े उससे पहले ही आठ्वीं कलम ने मुझे बचा लिया।

- हेतल

अक्रम यूथ के लिए इस कलम पर काम शुरू करते समय हमारी टीम ने रोज 15 बार यह कलम बोलनी है ऐसा तय किया था और उस अनुसार रोज़ कलम-8 बोलते थे। यह बोलने से मुझे इसका अर्थ समझ में आया और जब भी हम ग्रुप में किसी गैरहाज़िर व्यक्ति के लिए उल्टी-सीधी बातें करने लगते तो तुरंत ही मुझे आठ्वीं कलम याद आ जाती और तुरंत मैं कलम बोलने लगती ताकि ग्रुप में वह बात आगे न बढ़े।

इससे किसी की निंदा या किसी व्यक्ति के पीठ पीछे कुछ बोलने की मेरी आदत छूट गई।

- मीरा

Quotes

- संत कबीर

'तिनका कबहुँ ना निंदिए, जो पाँव तले होय।
कबहुँ उड़ आँखो पड़े, पीर घनेरी होय !!'

अर्थ : आपके पैरों तले दबे हुए छोटे तिनके की भी कभी निंदा न करें। कभी यदि वह तिनका उड़कर आपकी आँख में गिरे तो अत्यंत पीड़ादायक साबित होगा।

'सकळ लोकमां सहु ने वंदे,
निंदा न करे केनी रे;
वाच-काछ-मन निश्चल राखे,
धन-धन जननी तेनी रे...'

- नरसिंह मेहता

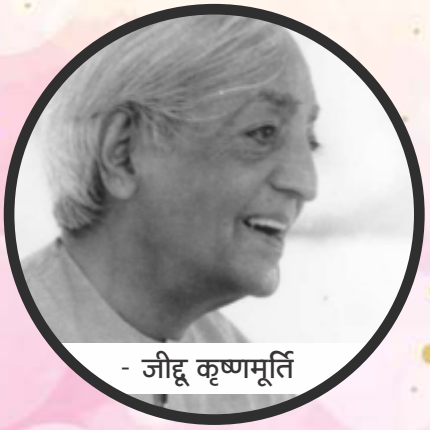

- जीद्दू कृष्णमूर्ति

हम में से ज्यादातर लोग अपनी
शक्ति, निरंतर बोल-बोल करके,
गपशप करके, टीका करके,
पीठ पीछे बोलकर व्यर्थ गँवाते हैं।

- ज्यॉर्ज हैरिसन

‘गपशप शैतान का रेडियो है।
उसके प्रचारक मत बनना।’

‘हमेशा याद रखें...
अफवाएँ विरोधियों द्वारा पैदा की जाती हैं,
बेवफूक लोगों द्वारा फैलाई जाती हैं,
और मूर्ख लोगों द्वारा स्वीकार की जाती हैं।’

- ज़ियाद के. ऐब्देलनौर

- स्टीव माराबोली

‘जो लोग गपशप करते हैं और अफवाएँ फैलाते हैं उनसे दूर रहो। ऐसे लोग दूसरे की भावनाओं के साथ खेलने का और नेगेटिविटी का मार्ग पसंद कर रहे हैं।’

"किसी भी व्यक्ति के बारे में नेगेटिव बातें न करें अथवा अफवाएँ न फैलाएँ। ऐसा करना उनकी और आपकी प्रतिष्ठा के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है।"

- ब्रायन कोस्लो

Q & A

प्रश्नकर्ता : किसी नेता या राजनीतिज्ञ के बारे में हमें सही बात मालूम न हो और उनके बारे में सोशल मीडिया पर कोई आर्टिकल या लेख पढ़कर हम उसे लाइक करें तो क्या हमने अपराध किया कहा जाएगा?

आप्तपुत्र : हाँ, सोशल मीडिया तो अपराध और विराधना की खान है। हमें लेना-देना नहीं और लाइक करने से हम उस व्यक्ति के व्यवस्थित के घेरे में आ गए। सोशल मीडिया गलत नहीं है लेकिन हम उसका सही इस्तेमाल करें तो अच्छा है। लेकिन अगर हम इस तरह इस्तेमाल करते हैं तो दो पैर में से चार पैर (जानवर गति) में जाने की तैयारी रखना।

प्रश्नकर्ता : विराधना और अपराध में क्या अंतर है?

आप्तपुत्र : आराधना का विरोधी शब्द विराधना है। आराधना यानी भजना करना और विराधना यानी विरोध करना। जबकि अपराध यानी टेढ़ेपन से विरोध करना।

उदाहरण के तौर पर यदि कोई पूज्य व्यक्ति नमस्कार करने के लिए कहे तो, आराधक नमस्कार करता है, विराधक नमस्कार नहीं करता और वहाँ से चला जाता है जबकि अपराधी नमस्कार तो नहीं करेगा ऊपर से किसी भी तरह से परेशान करके जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हम से अपराध कैसे हो जाता है?

आप्तपुत्र : आपने महावीर भगवान और गोशालक की बात सुनी होगी। महावीर भगवान के शिष्य गोशालक अपने ही गुरु के प्रबल प्रतिद्वन्द्वी बन गए थे। 'जिनसे सब कुछ सीखा उनका ही विरोध करना' यह तो बहुत बड़ा अपराध कहलाता है। गैरवाज़िब कारणों से किसी व्यक्ति और उसमें भी किसी पूजनीय व्यक्ति का विरोध करना तो अति भयंकर अपराध है।

गोशालक अपनी पहचान तीर्थंकर हुँ ऐसे देता था। महावीर भगवान ने जब इस बारे में सही बात बताई तब क्रोधित गोशालक ने महावीर भगवान पर तेजोलेश्या फेंकी। तेजोलेश्या की सुलगती अग्नि का एक महावर्तुल भगवान की प्रदक्षिणा करके गोशालक के शरीर की ओर वापस जाकर उसकी देह में समा गया और सात दिनों के अंदर ही उसकी मृत्यु हो गई। अंतिम दिनों में उसे बहुत पश्चाताप हुआ और उसने सभी से कहा कि 'मैं तीर्थंकर नहीं हूँ, महावीर भगवान ही सच्चे तीर्थंकर हैं।' और उसने महावीर भगवान से माफ़ी मांगी जिसके फलस्वरुप गोशालक की देवगति बँध गई लेकिन उसने जो तेजोलेश्या फेंकी उस गुनाह के फलस्वरुप उसे नर्कगति तो मिली ही। अतः अपराध से बहुत बचने की ज़रूरत है।

चलो, मदद करें

निराली कुछ परेशानी में है। उसे पता नहीं चल रहा है कि उसे क्या करना चाहिए। तो चलो, हम उसकी मदद करें ताकि निराली अपनी परिस्थिति से निकल सके।

1 निराली की क्लास में इतिहास के पीरियड में दूसरे विश्व युद्ध के बारे में बात होती है। अतः क्लास के सारे विद्यार्थी हिटलर के बारे में चर्चा करने में डूब जाते हैं। जिसमें ज्यादातर उनके नेगेटिव कृत्य और हिंसा की बातें ही हैं। ऐसे में निराली को क्या करना चाहिए?

(A) अकेले रहने के बजाय चर्चा में शामिल हो जाना चाहिए।

(B) चर्चा छोड़कर चले जाना चाहिए।

(C) नेगेटिव बोलना या सोचना नहीं चाहिए और नेगेटिव बोलने वाले को सही समझ मिले, ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए।

(D) बाहर बोलना नहीं चाहिए लेकिन मन में, 'हिटलर ऐसे ही थे,' ऐसे सहमत होना चाहिए।

2 जब निराली अपनी क्लास फ्रेन्ड नीतिशा के साथ घर जाती है तब नीतिशा रोज़ अपनी क्लास में पढ़ने वाली जीमी के बारे में नेगेटिव बातें करती रहती है। जैसे कि, 'कितनी कमज़ोर है... उसे कुछ भी पता नहीं चलता।' तो तब निराली को क्या करना चाहिए?

(A) घर अकेले ही जाना चाहिए।

(B) उसकी हाँ में हाँ मिलानी चाहिए ताकि फ्रेन्डशीप न टूटे।

(C) चर्चा के दौरान मौन रहकर प्रार्थना करनी चाहिए कि ज़ीमी के बारे में नेगेटिव खत्म हो जाए और चर्चा के अंत में कहना चाहिए कि, "आफटर ऑल, उसका स्वभाव अच्छा है।"

(D) नीतिशा ने जो बातें कही वो जा कर जीमी से कह देनी चाहिए।

3 जब निराली के दोस्त भिखारी को देखकर ऐसी बातें करें कि, 'इन लोगों को मेहनत नहीं करनी है और सिर्फ पैसे ही माँगने हैं।' ऐसे में कई बार निराली भी उनसे सहमत हो जाती है। तब क्या करना चाहिए?

(A) फ्रेन्ड्स ही बदल देने चाहिए।
(B) मन में भिखारियों से माफ़ी माँग लेनी चाहिए।
(C) कॉलेज जाने का रास्ता ही बदल लेना चाहिए।
(D) फ्रेन्ड्स के साथ सहमत होने की बजाय दूसरी बातें शुरू कर देनी चाहिए।

4 मम्मी-पापा के साथ टी.वी. में न्यूज़ देखते समय निराली को गुनहगार के लिए 'उन्हें फाँसी दे देनी चाहिए... उम्रकैद होनी चाहिए...' ऐसे विचार आते रहते हैं तब उसे क्या करना चाहिए?

(A) मम्मी-पापा को न्यूज़ देखने के लिए मना कर देना चाहिए।
(B) टी.वी ही बंद कर देना चाहिए।
(C) जिसके प्रति बूरे विचार आएँ उसकी माफ़ी माँगनी चाहिए।
(D) फ्रेन्ड्स के साथ चैट करना शुरू कर देना चाहिए।

5 इतिहास के टीचर को बोलने में थोड़ी तकलीफ़ होती है। रिसेस में उनकी नकल करके निराली के दोस्त बहुत मज़ाक उड़ाते हैं और कई बार इस मज़ाक में निराली भी शामिल हो जाती है। तब उसे क्या करना चाहिए?

(A) पीअर प्रेशर के तहत मज़ाक में साथ देना चाहिए।
(B) कुछ भी नहीं कहना चाहिए।
© 'यदि मुझे भी बोलने में ऐसी तकलीफ होती हो तो... ।' ऐसा सोचकर इतिहास के टीचर से माफ़ी माँग लेनी चाहिए और दोस्तों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।
(D) इतिहास के पीरियड में उपस्थित ही नहीं रहना चाहिए।

उत्तर 1, (C) 2, (C) 3, (B) 4, (C) 5, (C)

CONTEST TIME!

Exciting Prizes

GOOD LUCK!

The Power of 9 series 8

9 AKRAM YOUTH

9 KALAM

15 QUESTIONS FOR EVERY MONTH

TODAY'S YOUTH APP

The Official App of Dada Bhagwan Youth Group

for visiting **youth.dadabhagwan.org**

for downloading Free PDF of **Akram Youth magazine**

for **Subscribing** to Akram Youth Magazine

to play **The Power of 9 QUIZ** and much more...

ANDROID APP ON Google play

Download on the App Store

#कविता

कभी अनजाने में, तो कभी जान-बूझ कर;
वाणी से, तो कभी वर्तन से चले आए दु:ख दे कर...

बस इसी तरह हम, कई बार विनय चूक गए हैं;
मुँह बिगाड़ा है कभी, तो कभी सामने जवाब दे दिया है...

किसी का गलत बोलकर फिर मन ही मन मुस्काए हैं;
निंदा से कहीं आगे, हम अवर्णवाद तक चले आए हैं...

प्रत्यक्ष या फिर परोक्ष की, बहुत विराधना की है;
ऊपर से खुश हो कर, खुद को ही अपराधी बनाया है...

अज्ञानता से ऐसी तो कई तरह की गलतियाँ की हैं;
अब ज्ञानी मिलने पर, वापस लौटने की शुरुआत की है...

हे दादा ! हमें शक्ति दें कि, 'सब कुछ धुल जाए;
भाव बदल गए हैं, धीरे-धीरे वर्तन भी बदल जाए...'

जुलाई 2020
वर्ष : 8, अंक : 03
अखंड क्रमांक : 87

Dada Bhagwan

Spirituality at your fingertips...

આપ્તસુત્ર
જ્ઞાનવાણી
ભક્તિપદો
પુસ્તકો
વોલપેપર
મેગેઝીન

અને બીજું ઘણું...

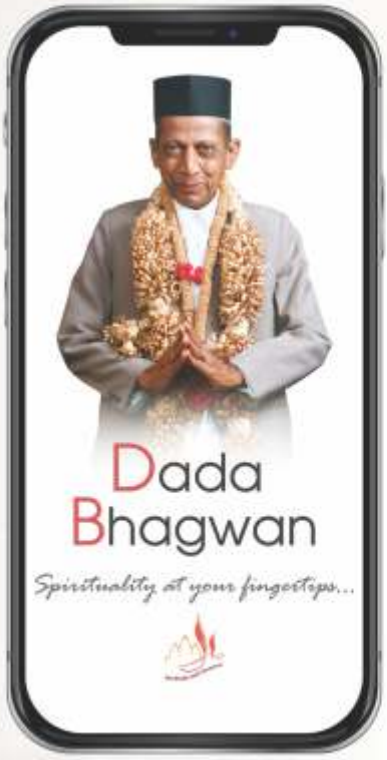

App For
Android & iOS

dadabhagwan.org

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.